International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 01, No. 03, July - September, 2019, pp.231-232

शैक्षिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सम्प्रेषण की प्रभावशीलता

सीमा चौहान*
डॉ. रीटा शर्मा**

प्रस्तावना

सम्प्रेषण एक ऐसा कार्य है, जिससे व्यक्ति अपने ज्ञान, अनुभवों, विचारों, सूचनाओं आदि के आदान–प्रदान में इस प्रकार का व्यवहार करता है कि उससे प्रत्येक व्यक्ति को उसी प्रकार की सूझबूझ, अर्थ, आशय एवं संदेशों की प्राप्ति होती है। व्यक्ति समुदाय में रहते हैं क्योंकि उनके बीच कुछ सामान्य बाते होती हैं, और सम्प्रेषण ऐसा रास्ता है जिससे वे उन सामान्य वस्तुओं को प्राप्त करते हैं। एक समुदाय व समाज के निर्माण के लिये आवश्यक है कि उनके बीच कुछ सामान्य बातें हो। ये बाते हैं : लक्ष्य, आस्थाएँ, आकांक्षाएँ, ज्ञान और आम समझ। सामान्यतः इसे कहा जाएगा विचारों की समानता। ये बातें, एक–दूसरे को भौतिक रूप में नहीं दी जा सकती है। सामान्य विचारों में भागीदारी ऐसे सम्प्रेषण से उत्पन्न होती है जिससे समान भावनात्मक और बौद्धिक स्वभाव का निर्माण होता है, अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के प्रति समान अनुक्रिया का निर्माण होता है। सहमति के लिये सम्प्रेषण जरूरी है। समाज का निर्माण उसमें रहने वाले लोगों की शारीरिक निकटता से नहीं होता, इसी प्रकार किसी व्यक्ति पर सामाजिक प्रभाव पड़ना केवल इस कारण से बन्द नहीं होता कि वह दूसरे लोगों से कुछ फीट या मीलों दूरी पर रहता है। एक–दूसरे से हजारों मील की दूरी पर रहने वाले व्यक्तिओं के बीच जितनी घनिष्ठता एक पुस्तक या पत्र के द्वारा कायम हो सकती है, उतनी घनिष्ठता एक छत के नीचे रहने वाले लोगों के बीच भी नहीं हो सकती।

ऐसे व्यक्तिओं से भी सामाजिक समूह का निर्माण नहीं होता जो सभी सामान्य लक्ष्य के लिये काम करते हो। एक कक्षा–कक्ष में एक शिक्षक एवं शिक्षार्थी का परस्पर साथ होना उनके सामान्य लक्ष्य की ओर अग्रसर होना ही नहीं दर्शाता अपितु उनमें घनात्मक सम्प्रेषण होने पर ही लक्ष्य पूर्ण होना समझा जायेगा। एक मशीन के पुर्जों का समान नतीजे हासिल करने के लिये अधिकतम सहयोग से काम करना ही प्रभावी सम्प्रेषण नहीं है अपितु वे सभी सामान्य लक्ष्य को पहचानते हो और सभी उसमें इतनी रूचि रखते हो कि अपनी विशेष क्रिया को उसी दृष्टि से नियमित करते हो तो वे समुदाय का रूप ले सकते हैं। लेकिन इसके लिये सम्प्रेषण की जरूरत होगी। इनमें से हर एक को जानना होगा कि दूसरा क्या कह रहा है और हर एक को अपने प्रयोजन और प्रगति के बारे में दूसरे को किसी न किसी प्रकार बताना होगा। सहमति के लिये सम्प्रेषण जरूरी है। प्रभावी सम्प्रेषण तभी होगा जब सम्प्रेषी और सम्प्रेषक एक–दूसरे से परस्पर प्रभावित होते रहें।

अतः हम यह मानने के लिये विवश होते है कि सर्वाधिक सामाजिक समूह में भी ऐसे अनेक सम्बन्ध होते हैं जो आज तक सामाजिक नहीं बन सके हैं। शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच में होने वाला व्यवहार भी अधिकांशतः मशीनी स्तर पर ही कायम प्रतीत होता है। जो आप चाहते हैं, उन परिणामों को पाने के लिये व्यक्ति एक–दूसरे का उपयोग करते हैं, और ऐसा करते समय, वे उन लोागों के भावनात्मक और बौद्धिक मिजाज की

* शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** प्राचार्या, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जामडोली, जयपुर, राजस्थान।

परवाह नहीं करते जिनका वे उपयोग करते हैं। दूसरे का इस प्रकार उपयोग करके वे अपनी शारीरिक श्रेष्ठता अथवा अपनी स्थिति, कौशल, तकनीकी योग्यता की श्रेष्ठता को अभिव्यक्त करते है।

जब तक शिक्षक–शिक्षार्थी, अभिभावक–संतान और शासक–शासित के बीच सम्बन्ध इस स्तर पर कायम रहते हैं तब तक यह नहीं कहा जा सकता है कि वे वास्तविक सामाजिक समूह के अंग हैं, भले ही अपनी–अपनी गतिविधियों के कारण उनके बीच कितनी ही निकटता क्यों न हो। आदेश देने और आदेश लेने से क्रिया और परिणाम का स्वरूप तो बदल सकता है लेकिन उससे प्रयोजनों की भागीदारी पैदा नहीं होती, सरोकारों का सम्प्रेषण नहीं होता। अतः शिक्षक–शिक्षार्थी सम्प्रेषण द्वारा एक–दूसरे के परस्पर पूरक होते हैं एवं उनके बीच होने वाला सम्प्रेषण शिक्षाप्रद होता है। सम्प्रेषण की प्राप्ति से अनुभव की वृद्धि होती है और उसमें परिवर्तन होता है। सम्प्रेषण करने वाला शिक्षक भी इस प्रक्रिया में पूर्ण रूप से प्रभावित होता है क्योंकि उसके द्वारा सम्प्रेषित विद्यार्थी जब तक शैक्षिक उद्देश्यों से लाभान्वित नहीं होगा, तब तक शिक्षक का लक्ष्य पूर्ण नहीं होगा। इसलिये प्रभावी सम्प्रेषण तभी सफल एवं सार्थक होगा जब शिक्षक–शिक्षार्थी इसमें सक्रिय सहयोग की भावना से परिपूर्ण हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- British Standards Institution (1990). Recommendations for citing and referencing published material, BS 5605: 1990. London: BSI.
- Mason-Whitehead, E. and Mason, T. (2008). Study Skills for Nurses. London. Sage Publications Ltd.
- Turabian, K. L. (1982). A manual for writers of research papers, theses and dissertations, 1 st British edition. J. E. Spink (ed). London: Heinemann.